सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित : 2007

वॉल्यूम: VIII
अंक: II
फरवरी/मार्च 2020

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

उच्च शिक्षा में चीनी भाषा की व्यापकता : संभावनाएं एवं अवसर– डॉ. धृति रॉय, सहायक प्राध्यापक और प्रभारी, चीनी विभाग

(सरकारी महाविद्यालय, रीनॉक में आमंत्रित व्याख्यान, 12 फरवरी, 2020)

सरकारी महाविद्यालय, रीनॉक द्वारा शोध क्रियाविधि पर आयोजित दो सप्ताह की कार्यशाला के व्याख्यान सत्र के एक भाग के रूप में डॉ. धृति रॉय, प्रभारी, चीनी विभाग को दिनांक 12 फरवरी 2020 को उच्च शिक्षा में चीनी भाषा के क्षेत्र विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. इयत्ता एम. उप्रेती ने अपने स्वागत भाषण में वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पारंपरिक विकल्पों से परे देखने की आवश्यकता पर जोर दिया और एक विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के रूप में चीनी के बढ़ते महत्व को रेखांकित किया। डॉ. उप्रेती ने सभी विषयों के छात्रों को अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलने और कुछ नवीन और नया करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. धृति रॉय ने वर्तमान वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में चीन के महत्वपूर्ण स्थान के बारे में बताया। नवाचार, कुशल उत्कृष्ठ विनिर्माण से लेकर इसके उभरते सेवा क्षेत्र तक चीन की आर्थिक वृद्धि नई ऊंचाइयों को छू रही है। नई सहस्राब्दी में प्रवेश करते ही चीन को दुनिया के अधिकांश देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के लिए भी देखा गया है और आज चीन भारत का प्रमुख व्यापार भागीदार है। अनुमान है कि भारत में श्याओमी, ओप्पो, जेडटीई, हुआवेई और चीन में सेवा देने वाली बीस भारतीय कंपनियां हैं जिनमें अशोक लीलैंड, एस्सार, टाटा इंफॉर्मेशन शामिल हैं। चीन या मंदारिन की आधिकारिक कामकाजी भाषा, जैसा कि आमतौर पर सभी को पता है, दुनिया में सबसे ज्यादा बोलने वाले हैं और बाकी दुनिया के साथ चीन के अधिकांश व्यापारिक और वाणिज्यिक लेनदेन के दौरान संचार और पत्राचार की मुख्य भाषा के रूप में कार्य करते हैं। आज जो स्थिति है, उसे देखते हुए डॉ. रॉय ने बताया कि चीनी भाषा में विशेषज्ञता वैश्विक बाजार में सबसे प्रतिष्ठित कौशल के रूप में उभर रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, फ्रांस, नीदरलैंड, बेल्जियम, जापान, कोरिया, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया भर के विश्वविद्यालय चीनी अध्ययन में विभिन्न अल्पकालिक और डिग्री पाठ्यक्रम संचलित कर रहे हैं। यहां तक कि इन देशों के कई स्कूल अपने मध्य और उच्च विद्यालय के पाठ्यक्रम में मंदारिन को विदेशी भाषा के पेपर के रूप में शामिल कर रहे हैं।

भारतीय संदर्भ में चीनी भाषा के पाठ्यक्रमों का जायजा लेते हुए डॉ. रॉय ने उल्लेख किया कि देश में केवल छह केंद्रीय विश्वविद्यालय, जैसे विश्व भारती, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय और सिक्किम विश्वविद्यालय में चीनी में पूर्ण डिग्री पाठ्यक्रम संचालित हैं। जबकि सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और उन्नत डिप्लोमा पाठ्यक्रम दिल्ली विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय और ईएफएलयू द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं। सिक्किम विश्वविद्यालय के चीनी विभाग पूरे पूर्वोत्तर

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

मुझे एसयू क्रॉनिकल का एक और अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बेहद खुशी हो रही है। मैं इस अवसर पर रीनॉक सरकारी महविद्यालय में दिनांक 12 फरवरी को उच्च शिक्षा में चीनी भाषा के दायरे पर एक व्याख्यान प्रदान करने के लिए डॉ. धृति रॉय, सहायक प्राध्यापक और प्रभारी, चीनी विभाग को बधाई देती हूँ। इस अंक में इको टूरिज्म पर यांगयांग में आयोजित अभिमुखी उन्मुखीकरण कार्यक्रम को भी रेखांकित किया जाता है। दिनांक 8 मार्च 2020 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कावेरी हॉल में महिला सशक्तिकरण पर एक गोलमेज चर्चा आयोजित की गई। इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा का हिस्सा बनने के लिए सिक्किम के प्रतिष्ठित लोगों को आमंत्रित किया गया था। मुझे आशा है कि आप इस अंक को पढ़कर आनंदित होंगे और और एसयू क्रॉनिकल के लिए लेख का योगदान देते रहेंगे।

कुंजिनी प्रकाश दर्नाल

इस अंक में

- संपादकीय
- उच्च शिक्षा में चीनी भाषा की व्यापकता : संभावनाएं एवं अवसर
- इको पर्यटन : संभावनाएं एवं मुद्दे पर अभिविन्यास कार्यक्रम
- महिला सशक्तिकरण पर गोलमेज चर्चा : मुद्दे और परिप्रेक्ष्य

ईमेल पता : suchronicle@cus.ac.in

पृष्ठ सं 1 से जारी

भारत का एक मात्र ऐसा विभाग है जो चीनी में पूर्ण डिग्री पाठ्यक्रम संचालित करता है। डॉ. रॉय ने दर्शकों के साथ चीनी विभाग के बारे में एक संक्षिप्त विवरण भी साझा की, जिसे 2010 में स्थापित किया गया था और वर्तमान चीनी भाषा में तीन साल का स्नातक पाठ्यक्रम, दो साल का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और पांच साल का पीएचडी पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। उन्होने कहा है कि सिक्किम विश्वविद्यालय में इस भाषा के पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने के पीछे मुख्य प्रेरक बल, रोजगार के अवसरों की विविध और विशाल क्षेत्र है जो चीनी भाषा के स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर छात्रों को प्रदान की जाती है। अनुवाद और व्याख्या में विशेषज्ञता प्रदान करने के अलावा सिक्किम विश्वविद्यालय में चीनी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी छात्रों को चीनी भाषा का ज्ञान और चीनी भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में उच्च स्तरीय अनुसंधान के लिए बहुत आवश्यक कौशल से लैस करता है, और उन्हें व्याख्याता पद के लिए यूजीसी नेट परीक्षा के लिए प्रशिक्षित करता है। एमएचआरडी छात्रवृत्ति, चीनी सरकार छात्रवृत्ति, एमओएफकॉम छात्रवृत्ति, कन्फ्यूशियस संस्थान छात्रवृत्ति और अनेक छात्रवृत्ति सहित भारत और चीन की सरकारों से भी छात्रवृत्ति की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है और पहले से ही चीनी विभाग से सात छात्र हैं जिन्हें उपर्युक्त छात्रवृत्तियों में से एक छात्रवृत्ति दी गई है, जो या तो चीन भर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उच्च स्तरीय भाषा प्रशिक्षण या परास्नातक कार्यक्रम के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई है। डॉ. रॉय ने सभी को यह भी बताया कि विभिन्न विषयों और आयु समूहों से इच्छुक भाषा सीखने वालों को आमंत्रित करने के मद्देनजर, सिक्किम विश्वविद्यालय ने प्रबंधन, वाणिज्य, पर्यटन, आतिथ्य प्रबंधन, कंप्यूटर अनुप्रयोग, सॉफ्टवेयर सूचना प्रौद्योगिकी के शिक्षार्थियों को लाभान्वित करने के लिए तथा समाजशास्त्र, इतिहास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राजनीतिक विज्ञान, भाषा और साहित्य के विषयों से शोधकर्ताओं को उनके विषयों में मूल्यवर्धन हेतु पहले ही छह महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू कर दिया है। गवर्नमेंट कॉलेज, रेनॉक में छात्रों और संकाय सदस्यों से प्राप्त प्रतिक्रिया बहुत उत्साहपूर्ण थी। उस सकारात्मक नोट पर डॉ. रॉय को उम्मीद है कि सिक्किम विश्वविद्यालय बहुत निकट भविष्य में ष्नी हाओष (चीनी भाषा में हैलो) कहने के लिए तैयार युवा और पुराने उद्यमी व्यक्तियों की एक समृद्ध, विविध कक्षा होगी।

इको पर्यटन : संभावनाएँ और मुद्दे पर अभिविन्यास कार्यक्रम

सिक्किम विश्वविद्यालय के उन्नत भारत अभियान प्रकोष्ठ ने यांगयांग रंगांग गाँव पंचायत, दक्षिण सिक्किम के गोद लिए गए गांवों के युवा हितधारकों के लिए इको पर्यटन रू संभावनाएँ और मुद्दे पर एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 7 मार्च 2020 को यांगयांग रंगांग गाँव पंचायत इकाई, दक्षिण सिक्किम के ग्राम प्राशन केंद्र में किया गया था। यूबीए के तहत ग्रामीण पुनर्निर्माण में सिक्किम विश्वविद्यालय की भागीदारी के रूप में यांगयांग के युवाओं के लिए वैकल्पिक ग्रामीण आजीविका की रणनीति के रूप में इको पर्यटन में पांच गोद लिए गांवों के युवाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत सिक्किम विश्वविद्यालय टीम और पंचायत अध्यक्ष श्री डी.के. राय के स्वागत भाषण से हुई, इसके बाद सिक्किम विश्वविद्यालय के यूबीए सेल द्वारा अभिविन्यास कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया गया। अभिविन्यास कार्यक्रम के तीन सत्र 11.30 बजे से शाम 4.30 बजे तक हुए जिसमें बाह्य संसाधन व्यक्ति के रूप में श्री रेन्जीनो लेप्चा, मेवेदिर (सुनिश्चित जैविकता) के मुख्य परिचालन अधिकारी और सिक्किम विश्वविद्यालय के डॉ. भोज आचार्य सत्र का संचालन किया। श्री लेप्चा ने यांगयांग में इको पर्यटन के विभिन्न आयामों और इसकी संभावनाओं पर विस्तार से बात की। सिक्किम विश्वविद्यालय के चार विभागों, जैसे समाजशास्त्र, संगीत, प्राणी विज्ञान और पर्यटन के 31 छात्रों के साथ डॉ. संध्या थापा, यूबीए के समन्वयक, डॉ. भोज आचार्य (प्राणिविज्ञान विभाग) और डॉ. संतोष कुमार (संगीत विभाग) ने सिक्किम विश्वविद्यालय के यूबीए सेल का प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम में पंचायत सदस्य, यांगंग के अधिकारी, गोद लिए गए गांवों के युवाओं के साथ–साथ सिक्किम विश्वविद्यालय के छात्रों ने भी भाग लिया।

महिला सशक्तिकरण पर गोलमेज चर्चा: मुद्दे और परिप्रेक्ष्य

महिला और बाल विकास मंत्रालय और यूजीसी से प्राप्त निर्देशों के अनुसार सिक्किम विश्वविद्यालय ने 8 मार्च 2020 को विश्वविद्यालय के कावेरी हॉल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए महिला सशक्तीकरणरू मुद्दे और परिप्रेक्ष्य पर एक गोलमेज चर्चा आयोजित की।कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रोजी चामलिंग ने सभी विद्वतजनों और अथितियों का स्वागत किया। इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस ष्मैं लिंग समानता हूँष् के विषय को ध्यान में रखते हुए उद्घाटन सत्र की शुरुआत कुलसचिव श्री टी.के.कौल के स्वागत भाषण से हुई। कार्यक्रम में सभी की उपस्थिति के लिए स्वागत और धन्यवाद करते हुए श्री टी.के. कौल ने इस अवसर का उल्लेख करते हुए कहा कि यह मानव जाति के आधे हिस्से का उत्सव है और इस तथ्य पर बल दिया कि 8 मार्च हमेशा सिक्किम विश्वविद्यालय में यह दिवस मनाया जाता रहा है। इस दिवस का जश्न मनाते हुए उन्होंने समाज के सभी सदस्यों द्वारा परिवार और कार्यस्थल दोनों स्थानों में आपसी सम्मान को बनाए रखने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संचारी मुखर्जी ने बीज भाषण दिया। प्रोफेसर मुखर्जी ने ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करते हुए अपना व्याख्यान शुरू किया, जिसने घटना और 8 मार्च का दिन दोनों को महत्व के बारे में बताया और पंद्रह हजार अमेरिकी महिला कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध मार्च से संबंधित विषयों को रेखांकित किया, जो वर्ष 1909 में न्यूयॉर्क शहर में लंबे समय तक काम करने, कम वेतन और महिलाओं के लिए मतदान के अधिकारों की कमी के खिलाफ अपनी आवाज उठाने वाले पहले व्यक्ति थे और साथ ही साथ वर्ष 1917 में तत्कालीन रूसी राजधानी पेत्रोग्राद में 8 मार्च (रूसी कैलेंडर में 23 फरवरी के दिन) को रूसी महिला कपड़ा श्रमिकों द्वारा किए गए विरोध के संबंध में ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप बाद में जार निकोलस प्प को राजगद्दी हासिल हुई और महिलाओं ने वोट देने के अपने अधिकारों पर जीत हासिल हुई। प्रोफेसर मुखर्जी ने कहा कि वर्ष 2020 इस मायने में महत्वपूर्ण था कि यह महिला अधिकारों के क्षेत्र में अब तक हुई प्रगति का आकलन करने के लिए था। उन्होंने स्पष्ट रूप से चिंतनीय बुनियादी मुद्दों को रखा जो अभी भी महिलाओं के लिए सम अधिकारों के कार्यान्वयन में बाधा हैंय ये मुख्य रूप से गरीबी, सशस्त्र संघर्ष और यौन अत्याचार और उत्पीड़न हैं। प्रोफेसर मुखर्जी ने इस तथ्य को भी रेखांकित किया कि पिछले कुछ वर्षों से महिलाओं के अधिकारों को बड़े पैमाने और मानवाधिकारों के संदर्भ में देखा जाने लगा है और इसलिए महिलाओं और बच्चों को अपमानजनक परिस्थितियों के माध्यम से अपने तरीके से लड़ने में मदद करने के लिए उपाय किए जा रहे हैं। इसके बाद समय की मांग है कि लैंगिक मानदंडों को चुनौती दी जाए, चाहे कोई भी लैंगिक झुकाव हो, सभी को अपनाए जाए और सभी के लिए एक समान समाज बनाने के लिए सभी को अपनी क्षमता में योगदान करने के लिए प्रेरित किया जाएँ। उनके अनुसार सही दिशा में छोटे ठोस और सकारात्मक कदम उठाकर ही इस तरह के बदलाव लाए जा सकते हैं। दूसरे सत्र में सिक्किम राज्य के विभिन्न क्षेत्रों और व्यवसायों के विशिष्ट वक्ताओं के साथ एक गोलमेज चर्चा की गई, जिसमें डॉ. डोमा भूटिया, अवर महाधिवक्ता, सिक्किम सरकार, श्री अनिल राज राय, विशेष सचिव और मिशन निदेशक, स्वच्छ भारत अभियान, सिक्किम सरकार, श्री पेमा वांगचुक, सलाहकार संपादक, समीट टाइम्स, श्रीमती उषा लाचुंगपा, सेवानिवृत्त प्रधान अनुसंधान अधिकारी, वन पर्यावरण और वन्यपशु विभाग, सिक्किम सरकार, सुश्री ओंगमू भूटिया, पुलिस अधीक्षक (सीआईडी), सिक्किम सरकार, डॉ इयत्ता उप्रेती, प्राचार्य, रेनॉक गवर्नमेंट कॉलेज, सिक्किम और डॉ. स्वाति अक्षय सचदेवा, पीठासीन अधिकारी, आंतरिक शिकायत समिति, सिक्किम विश्वविद्यालय भी शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक और राउंड टेबल चर्चा के मध्यस्थ डॉ रोजी चामलिंग ने दर्शकों से सभी वक्ताओं का परिचय कराया और उनके विशिष्ट क्षेत्रों में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। सिक्किम राज्य की पहली महिला अतिरिक्त महाधिवक्ता डॉ. डोमा भूटिया ने इस तथ्य पर जोर देते हुए नागरिक समाज के सभी सदस्यों को लैंगिक पक्षपात और पूर्वाग्रहों को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित किया कि सामाजिक जागरूकता पैदा करना महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त नहीं था, लेकिन यह पदानुक्रमित कार्य प्रणाली में ठोस संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी दोहराया कि पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर के कारण, सामाजिक जुड़ाव के सभी संभावित क्षेत्रों में महिलाओं की जैविक आवश्यकताओं विचार करना और प्रदान करना भी आवश्यक था। दूसरे वक्ता, श्री अनिल राज राय ने मासिक धर्म स्वच्छता पर विचार रखते हुए सामाजिक वर्जना को तोड़ा, जो महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण के साथ इसके घनिष्ठ संबंध के कारण अत्यधिक महत्व का विषय है। इस तथ्य पर जोर देते हुए उन्होने कहा कि महिलाएं वंश–वृद्धि के लिए सक्षम हैं, इसलिए उनके स्वास्थ्य को बनाए रखने और स्वच्छता बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने समाज के सभी सदस्यों को सचेत रूप से न्यूनतमवाद की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करने और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों के उपयोग पर ध्यान देने की सलाह दी। दिन के तीसरे वक्ता श्री पेमा वांगचुक ने अपने संबोधन में इस तथ्य को रेखांकित किया कि यद्यपि सिक्किम में महिलाओं की स्थिति और महिलाओं के अधिकारों की स्थिति देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में सराहनीय है, फिर भी कुछ अंतराल और खामियाँ मौजूद हैं। राज्य के भीतर सामाजिक और राजनीतिक अंतरिक्ष में जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है। चौथे वक्ता, श्रीमती उषा लाचुंगपा ने लिंग भेदभाव की सूक्ष्म शक्तियों के बीच एक प्राकृतिक जीवविज्ञानी के रूप में काम करने और शोध के अपने अनुभवों को साझा किया। उनकी राय में, समाज में युवा, प्रतिभाशाली और सक्षम

महिलाओं के मन में अवरोध पैदा करने में सामाजिक बुनियाद काफी हद तक जिम्मेदार हैं। सभी प्रकार की आशंकाओं के निरंतर बढ़ाते रहने से उनके मन में अक्षमता और अपर्याप्तता के विचारों का पोषण होता है।

देश की बहुत कम महिलाओं द्वारा उठाए गए अध्ययन एक क्षेत्र वन पर्यावरण और वन्य जीवन विभाग के प्रमुख अनुसंधान अधिकारी के रूप में कार्य करने के बाद श्रीमती लाचुंग्पा ने यह भी कहा कि महिलाओं में संरक्षण और परिरक्षन का एक निहित गुण है क्योंकि वे विश्व की माताएँ हैं। पांचवें आमंत्रित वक्ता सुश्री ओंगमू भूटिया ने लैंगिक असमानता के बारे में अपने विचारों को साझा किया, उन्होने विशेष पुलिस अधीक्षक के रूप में अपने कैरियर, एक ऐसा पेशा जिसमें ज्यादातर पुरुषों का वर्चस्व था, के दौरान बेहद करीब से लैंगिक असमानता को देखा। दर्शकों के लिए अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि सभी मानवों के लिए समान अधिकारों के मुद्दों के प्रति समाज के सभी जिम्मेदार सदस्यों को संवेदनशील बनाना आवश्यक था। हालाँकि, उन्होंने अपने सहकर्मियों और दोस्तों के बीच महिला सहकर्मियों के बारे में कुछ सामान्य धारणाओं को साझा करके समाज में विद्यमान लैंगिक पक्षपात के बारे में चिंता व्यक्त कीय कि महिलाओं की उपलब्धियों को शायद ही कभी स्वीकार किया जाता है और भले ही वे कुछ मामलों में हों, उनकी प्रतिभा के लिए शायद ही उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाता है, कि उनकी कड़ी मेहनत ज्यादातर किसी का ध्यान नहीं जाती है, कि उनकी उपस्थिति में शीर्ष स्तर के संगठनात्मक ढांचे की कमी पाई जाती है, और यह कि गोपनीयता नैतिकता के उल्लंघन के डर में वे अक्सर जानकारी पहुंच से वंचित रह जाती हैं। दिन के छठे वक्ता डॉ. इयत्ता उप्रेती ने महिलाओं को परिवारों को बढ़ाने और संस्थानों का निर्माण करने के बारे में बताते हुए अपना भाषण शुरू किया। उन्होंने समाज में सभी युवा महिलाओं को दृढ़ विश्वास के साथ काम करने और समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। वह मानती है कि एक–दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय, यह समय है कि पुरुष और महिला एक–दूसरे के साथ सहयोग करें, एक–दूसरे का समर्थन करें, और गरिमा, प्रेम और करुणा के साथ मिलकर काम करें। समाजशास्त्री के रूप में सातवें वक्ता डॉ स्वाति अक्षय सचदेवा ने वैकल्पिक व्याख्यान प्रदान किया जो कुछ तथ्यों, आंकड़ों और आंकड़ों को चुनौती देते हैं जो कागज पर दिखाई देते हैं। सिक्किम राज्य देश के सर्वश्रेष्ठ लिंग सूचकांक में से एक होने के बावजूद, शिक्षा और सरकारी क्षेत्र में महिलाओं की सराहनीय उपस्थिति के बावजूद और सिक्किम में कन्या भ्रूण हत्या की मुश्किल से कोई कथित मामला होने के बावजूद उन्होंने राज्य में घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव से संबंधित कुछ मुद्दों के बारे में बताया, जिससे समाज में लोगों की लैंगिक पक्षपाती मानसिकता को दर्शाता है। अन्य सभी वक्ताओं ने जो कहा उस पर विचार करते हुए श्री टी. के. कौल, कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय ने दिन के अंतिम वक्ता के रूप में अपना दृष्टिकोण साझा किया। श्री कौल ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि पारिवारिक और सामाजिक संरचना के भीतर पुरुष और महिला दोनों गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं और इसलिए उनके बीच केवल उचित समन्वय और सहयोग ही एक साथ संतुलित और उत्पादक जीवन जी सकते हैं। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हम लैंगिक समानता के क्षेत्र में मौजूद अंतर को कम करने का कार्य करें कि हम एक–दूसरे के साथ सम्मान और मर्यादा के साथ पेश आते हैं और हम एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। श्री कौल ने इस तथ्य पर भी जोर दिया कि लोगों की मानसिकता में परिवर्तन के साथ–साथ संरचनात्मक ढांचे में बदलाव के साथ निकटता की आवश्यकता है, ये दोनों परिवर्तन साथ–साथ होने की जरूरत है, जिसके बिना लिंग समानता के उद्देश्य को सही मायने में हासिल नहीं किया जा सकता है। विचार–विमर्श और अनुभवों को साझा करने के बाद सभा को दर्शकों के सवालों के लिए खोल दिया गया, जो दिलचस्प और आकर्षक था।